दृष्टि The Vision

इतिहास (वैकल्पिक विषय)

(मॉड्यूल VIII-विश्व इतिहास)

DTVF/18(JS)–OPS-**H8**

निर्धारित समयः तीन घंटे
Time allowed: Three Hours

अधिकतम अंकः 250
Maximum Marks: 250

नाम (Name): mintu lal meena

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं?

हाँ	✓	नहीं	

मोबाइल नं. (Mobile No.):

ई-मेल पता (E-mail address):

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): 08/ 4/8/2018

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2018] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2018]:

1	1	4	2	2	5	8

परीक्षा का माध्यम (Medium of Exam.): हिन्दी

विद्यार्थी के हस्ताक्षर (Student's Signature): [signature]

नोटः प्रश्न-पत्र के लिये विशिष्ट अनुदेश अंतिम पृष्ठ पर संलग्न है।

Evaluation Analysis

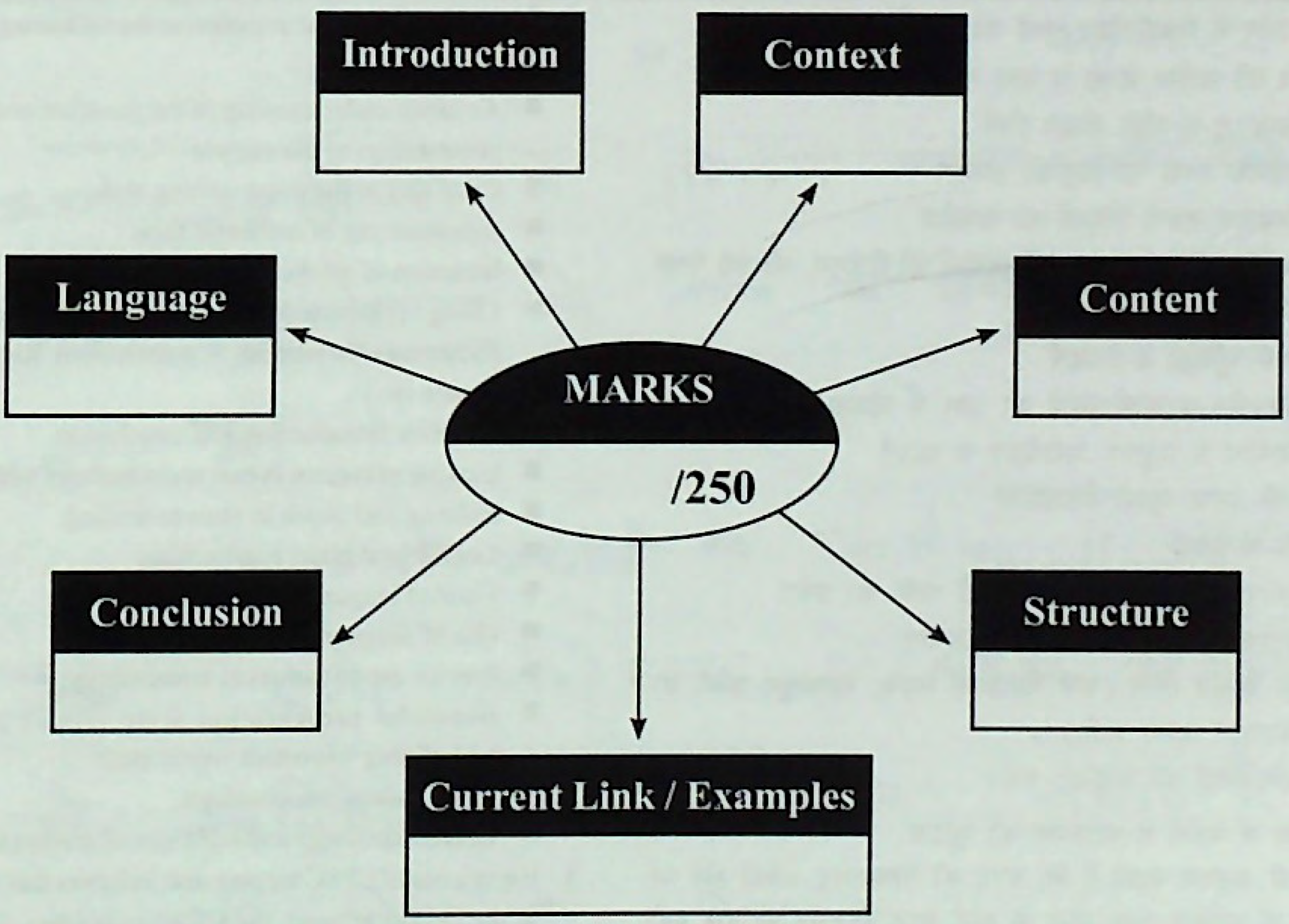

मूल्यांकनकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Evaluator (Code & Signatures)

पुनरीक्षणकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Reviewer (Code & Signatures)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

खण्ड-क / SECTION-A

1. निम्नलिखित में से प्रत्येक का उत्तर लगभग 150 शब्दों में दीजिये: $10 \times 5 = 50$

Answer the following in about 150 words each:

(a) भारत में औपनिवेशिकता की दौड़ में फ्राँसीसियों की असफलता के कारणों को बताइये।

Discuss the reasons for the failure of the French in the race of Colonisation of India.

भारतीय व्यापार पर एकाधिकार करने के लिए अंग्रेजों एवं फ्रांसीसियों के मध्य हुए युद्धों को कर्नाटक युद्ध कहा जाता है जिनमें फ्रांसीसियों की पराजय के कारण निम्न हैं।

→ फ्रांसीसी कंपनी एक सरकारी कंपनी थी जिसके अधिकारियों एवं कर्मचारियों में समर्पण एवं सहयोग का अभाव था जबकि EIC के कर्मचारी व्यापारिक लाभ की प्रेरणा से कार्य करते थे।

→ फ्रांस में निरंकुश राजतंत्र था और लुई 15वें, 16वें की नीतियाँ वित्तीय दृष्टि से अकुशल थी। वहीं ब्रिटेन में उदारवादी लोकतंत्र था जहाँ कुशल अर्थव्यवस्था पर बल दिया जा रहा था।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

→ ब्रिटिश नौसेना, फ्रांसीसी नौसेना की तुलना में अधिक शक्तिशाली थी

→ बंगाल ब्रिटिश सत्ता का केन्द्र था जो आर्थिक एवं व्यापारिक दृष्टि से महत्वपूर्ण था जबकि पांडिचेरी फ्रांसीसियों की सत्ता का केन्द्र था जिसका आर्थिक दृष्टि से महत्व नहीं था।

इसी सन्दर्भ में कहा जाता है कि "न तो सिकन्दर महान और न ही नेपोलियन पांडिचेरी से प्रारम्भ करके उस शक्ति को पराजित नहीं कर सकते थे जिसका समुद्र एवं बंगाल पर नियन्त्रण थे।"

अन्ततः 1760 ई. वांडिवाश के युद्ध में अंग्रेजों ने फ्रांसीसियों को पराजित कर भारतीय व्यापार पर एकाधिकार कर लिया।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

(b) अंग्रेज़ों ने सिंध को अपने साम्राज्य में क्यों और किस प्रकार सम्मिलित किया?

Why and how did the British annex Sindh in their empire?

सिंध का आर्थिक - सामरिक महत्व था। यह अरब सागर से यूरोप के आने वाले समुद्री मार्ग से एवं ईरान के रास्ते स्थल मार्गों से जुड़ता था। अत: इस पर नियंत्रण करके रूस से भारतीय साम्राज्य की सुरक्षा की जा सकती थी।

यह आर्थिक दृष्टि से सिंधु नदी के उपजाऊ मैदान में अवस्थित था। अत: यहाँ से ब्रिटिश खाद्यान्न आवश्यकताओं की पूर्ति की जा सकती थी।

अंग्रेज अफगान युद्ध में पराजित होने के पश्चात अपनी शक्ति एवं प्रतिष्ठा स्थापित करने हेतु किसी क्षेत्र को विजित करना चाहते थे। अतः उपर्युक्त कारणों से सिंध को विजित किया।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रारम्भ अंग्रेजों ने सिंध के अमीरों के मैत्रीपूर्ण संधि कर व्यापारिक एवं सैनिक सुविधाएँ प्राप्त की किन्तु बाद में अंग्रेजों ने सिंध पर संधि शर्तों के उल्लंघन का आरोप लगाते हुए 1843 में सिंध का विलय कर लिया जबकि सिंध के अमीरों ने संधि शर्तों का पूर्णतः पालन किया था।

इस सन्दर्भ में चार्ल्स नेपियर ने कहा है "हमें सिंध के अधिग्रहण का कोई अधिकार नहीं है फिर भी हम ऐसा करेंगे और ऐसा करना उपयोगी, लाभदायक एवं मानवोचित कृत्य होगी।"

इस कथन के माध्यम से नेपियर ने सिंध विलय को वैध ठहराने का प्रयास किया है।

Copyright - Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(c) भारतीय ग्रामीण अर्थव्यवस्था की संरचना पर ब्रिटिश राजस्व नीतियों का क्या प्रभाव पड़ा? चर्चा कीजिये।

What impact did the British revenue policies had on the structure of Indian rural economy? Discuss.

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

ब्रिटिश भूराजस्व नीतियों ने कृषि को ~~बिक्री~~ क्रय-विक्रय योग्य बना दिया। जिससे जमींदारों का विकास हुआ और संयुक्त परिवार प्रथा का विघटन प्रारंभ हुआ।

अधिकतम भूराजस्व वसूलने के कारण किसानों के पास धन की कमी हुई और वे निर्धन हुए। साथ ही भूराजस्व चुकाने के लिए साहूकारों एवं महाजनों के शोषण का शिकार हुआ। फलतः ग्रामीण ऋणग्रस्तता बढ़ी।

अंग्रेजों ने भूराजस्व चुकाने में भारतीय किसानों को नकद जमाने के लिए कृषि के वाणिज्यीकरण पर बल दिया। फलतः खाद्यान्न उत्पादन में कमी होने से अकाल एवं भुखमरी

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

की स्थिति हुई

उपरोक्त नीतियों के कारण महाजनों के रूप में साहूकार, महाजन एवं जमींदारों का उदय हुआ और किसान-महाजन एवं किसान-जमींदार सम्बन्ध तनावपूर्ण हुए। फलत: भारतीय गाँव अशांत हुए।

निष्कर्ष रूप से कहा जा सकता है उपरोक्त नीतियों के कारण निर्धनता, ऋणग्रस्तता, अकाल, कुटीर उद्योग का विस्थापन जैसी समस्याएँ उत्पन्न हुई और ये भारतीय ग्रामीण अर्थव्यवस्था का मुख्य अभिलक्षण बन गया।

Copyright - Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(d) लॉर्ड कर्जन द्वारा बंगाल विभाजन के आधारों की चर्चा करें? इसने राष्ट्रीय भावना की वृद्धि में किस प्रकार सहयोग दिया?

Discuss the basis of partition of Bengal by Lord Curzon. How did it contribute to the growth of nationalist feelings?

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

16 अक्टूबर, 1905 को लॉर्ड कर्जन द्वारा बंगाल को पूर्वी बंगाल (ढाका, राजशाही, चटगाँव) एवं पश्चिमी बंगाल (पश्चिम बंगाल, बिहार, ओडिशा) में विभाजित कर दिया।

बंगाल विभाजन के ~~कारण~~ पीछे ब्रिटिश सरकार द्वारा यह तर्क दिया गया कि बंगाल एक बड़ा प्रान्त है। अतः यहाँ शासन एवं व्यवस्था का संकट उत्पन्न होता है जिससे व्यापारिक प्रतिविधियाँ बाधित होती है।

साथ ही पूर्वी बंगाल के लोगों के लिए कोलकाता अत्यधिक दूर होने के कारण प्रशासनिक असुविधा होती है।

वास्तविक कारण

→ बंगाल भारतीय राष्ट्रवाद का केन्द्र था। अतः राष्ट्रवाद को क्षीण करने के लिए बंगाल विभाजन किया गया।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

→ हिन्दू-मुस्लिम साम्प्रदायिकता को बढ़ावा देकर ब्रिटिश शासन की पकड़ मजबूत करना।

बंगाल विभाजन के विरुद्ध राष्ट्रवादियों द्वारा स्वदेशी आन्दोलन प्रारम्भ हुआ जिसमें विद्यार्थियों, महिलाओं इत्यादि ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस तरह से स्वदेशी पर बल देने एवं विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार करके राष्ट्रीयता को बढ़ावा मिला।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है बंगाल विभाजन के विरुद्ध हुए स्वदेशी आन्दोलन से भारतीय राष्ट्रवाद में वृद्धि हुई और राष्ट्रीय आन्दोलन नव चरण में प्रवेश कर गया जो नई पद्धतियों, नये चरण से युक्त था।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(e) क्या भारतीय पूंजीवादी वर्ग का विकास उपनिवेशवाद का उपोत्पाद था? टिप्पणी कीजिये।

Was the emergence of Indian capitalist class a by-product of colonialism? Comment.

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

भारत में ब्रिटिश शासन की स्थापना के पश्चात् भारत एवं ब्रिटेन के मध्य व्यापार - वाणिज्य बढ़ा। इसी क्रम में भारत में भी आधुनिक उद्योगों की स्थापना हुई। जैसे - सीमेंट उद्योग, सूती वस्त्र उद्योग, जूट उद्योग, लौह-इस्पात उद्योग। इन उद्योगों के विकास के परिणामस्वरूप भारत में एक पूंजीपति वर्ग का उदय हुआ। इसी आधार पर यह कहा जाता है कि भारतीय पूंजीवादी वर्ग उपनिवेशवाद का उपउत्पाद था।

किंतु यह पूर्णरूप मान्य नहीं है क्योंकि प्राचीन काल से ही भारत में हस्तशिल्प कार्यों में बड़ा व्यापक वर्ग था और निखिल श्रेणियाँ ~~[illegible]~~ थी जो व्यापारिक कार्यों में संलग्न थी।

बंगाल में अब्दुल गफूर वोहरा के

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

पश्चात ईस्ट इंडिया कंपनी के भी आधीन पूंजी की ओर लीया, बैंकिंग, हुण्डी प्रणाली के कारण पूंजीवादी तत्वों का विनाश हो रहा था।

किन्तु 18वीं शताब्दी में अंग्रेजों के व्यापारी विजय के साथ ही पूंजीवादी तत्वों का विकास रुक गया और भारतीय अर्थव्यवस्था का रूपान्तरण औपनिवेशिक अर्थव्यवस्था में हो गया।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

2. (a) डूप्ले भारत में अंग्रेज़ों के विरुद्ध फ्राँसीसियों की असफलता के लिये किस सीमा तक उत्तरदायी था? 15

To what extent was Dupleix responsible for the failure of the French against the British in India? 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

भारतीय व्यापार पर अधिकार स्थापित करने के लिए ~~फ्रांसीसियों~~ फ्रांसीसियों एवं अंग्रेजों के मध्य हुए तीन युद्धों को कर्नाटक युद्ध के नाम से जाना जाता है। ~~द्वितीय कर्नाटक~~ इसमें अन्तिम रूप फ्रांस पराजित हुआ भारतीय राजनीति से बाहर हो गया जिसमें डूप्ले की भूमिका निम्न थी-

→ डूप्ले ने राजनैतिक महत्वाकांक्षा की पूर्ति के लिए कम्पनी के आर्थिक-व्यापारिक पक्ष की अवहेलना की।

→ डूप्ले यह समझ पाने में ~~विफल~~ विफल रहा कि भारत में अंग्रेजों एवं फ्रांसीसियों के मध्य होने वाले संघर्ष यूरोप एवं अमेरिका में इन दोनों देशों के मध्य

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

होते वाले संघर्ष का ही भाग है।

→ इल्ले ने समक्ष पेरिस में अपने उच्च अधिकारियों को कठिनाइयों से अवगत नहीं करवाया और सैन्य सहायता और वित्तीय सहायता की भी माँग नहीं की।

किंतु फ्रांसीसियों की पराजय के लिए केवल डूप्ले ही उत्तरदायी नहीं था बल्कि इसके अन्य कारण भी थे, जो अग्रलिखित है —

1) फ्रांसीसी कंपनी सरकारी कंपनी थी जिसके कर्मचारियों एवं अधिकारियों में समन्वय एवं सहयोग की कमी थी और वे व्यापारिक लाभ की प्रेरणा से कार्य नहीं करते थे।

जबकि EIC के अधिकारी संगठित होकर कंपनी हित के लिए कार्य करते थे।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright - Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

2) फ्रांस की निरंकुश, सत्ता की नीतियाँ वित्तीय दृष्टि से अकुशल थी और आर्थिक गतिविधियों पर सरकार का नियन्त्रण था।

वहीं ब्रिटेन में उदारवादी लोकतांत्रिक शासन था और वे मुक्त अर्थव्यवस्था में विश्वास रखते थे।

3) फ्रांसीसी नौसेना, ब्रिटिश नौसेना की तुलना में कमजोर थी।

4) ब्रिटिश सत्ता का केन्द्र बंगाल था जो आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न था जबकि फ्रांसीसी सत्ता का केन्द्र पांडिचेरी था जिसका आर्थिक-सामरिक महत्व नहीं था।

इसी सन्दर्भ में स्मिथ ने कहा है कि " न तो अल. सिकन्दर महान और न ही नेपोलियन भारतीय साम्राज्य को जीत सकते थे। यदि वे पांडिचेरी से प्रारंभ करते और उस शक्ति से लड़ते जिसका बंगाल और समुद्र पर नियन्त्रण था। इस प्रकार फ्रांस की पराजय के कारण उसकी कमियों निहित थीं

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(b) "कार्नवालिस ने हेस्टिंग्स द्वारा स्थापित नींव पर इमारत खड़ी की।" इस कथन के दृष्टिगत कार्नवालिस के सुधारों का वर्णन कीजिये। 15

"Cornwallis raised the edifice on the foundation provided by Hastings." With respect to this statement discuss the reforms initiated by Cornwallis. 15

वारेन हेस्टिंग्स ने 1772 में बंगाल के द्वैध शासन को समाप्त कर शासन पर प्रत्यक्ष नियंत्रण स्थापित किया और प्रशासनिक संगठन का निर्माण किया।

हेस्टिंग्स के समय कंपनी के कर्मचारी व्यापार के साथ-साथ प्रशासनिक कार्य देखते थे। वे प्रशासनिक कार्यों की बजाय निजी व्यापार एवं भ्रष्टाचार पर अधिक ध्यान रखते थे।

ऐसी स्थिति में कॉर्नवालिस ने एक व्यावसायिक प्रशासनिक वर्ग का गठन किया। इसी कारण उसे भारतीय सिविल सेवा का जनक कहा जाता है।

साथ ही उसने भ्रष्टाचार पर नियंत्रण हेतु निम्न उपाय किये-

→ कर्मचारियों के वेतन में वृद्धि की।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

→ वरिष्ठता को पदोन्नति का आधार बनाया।

→ कर्मचारियों के निजी व्यापार करने एवं उपहार लेने पर प्रतिबंध लगाया।

हेस्टिंग्स ने न्यायिक व्यवस्था के लिए प्रत्येक जिले में एक दीवानी एवं एक फौजदारी अदालत की स्थापना की थी। कॉर्नवालिस ने इसे आगे बढ़ाया।

कॉर्नवालिस ने न्यायिक व्यवस्था ने सन्दर्भ में कॉर्नवालिस कोड का गठन किया और न्यायिक एवं प्रशासनिक मामलों का पृथक्करण किया। यह शक्तिपृथक्करण सिद्धांत पर आधारित था।

कॉर्नवालिस ने न्यायप्रणाली के सन्दर्भ में पारंपरिक फौजदारी कानूनों को लागू किया और अभिभावक की इच्छा से दोषी को माफ करने की प्रणाली समाप्त कर दी जिसे विधि के शासन सिद्धांत।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

के नाम से जाना जाता था।

इसी तरह कॉर्नवॉलिस ने यह निर्धारित किया कि उच्च पदों पर नियुक्ति योग्यता के आधार पर किया जाना चाहिए न कि जाति/धर्म के आधार पर। इस तरह उसने आधुनिक न्याय प्रणाली की स्थापना की।

इसी तरह उसने भारतीय पुलिस सेवा का गठन किया ताकि कानून व्यवस्था बनायी रखी जा सकी।

निष्कर्ष के तौर कहा जा सकता है कि कार्नवालिस ने हेस्टिंग्स की नींव पर मजबूत इमारत खड़ी की जो कि ब्रिटिश प्रशासन का आधार स्तम्भ था। (सिविल सेवा)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(c) "हैदरअली एक साम्राज्य स्थापित करने के लिये पैदा हुआ था और टीपू उसे खोने के लिये।" क्या आप इस तर्क से सहमत हैं? 20

"Hyder Ali was born to establish an empire and Tipu to lose it." Do you agree with this assertion? 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

हैदर अली एक वीर सेनापति, कुशल कूटनीतिज्ञ एवं दक्ष प्रशासक था।

अपनी सैन्य कुशलता के बदौलत वह एक साधारण सैनिक से 1761 ई. में मैसूर का शासक बन गया। वह प्रशिक्षित सेना का महत्व समझता था। अतः उसने अपनी सेना को यूरोपीय आधार पर प्रशिक्षित किया। उसने डिंडीगुल में एक शस्त्रागार को भी निर्माण करवाया।

वह एक दक्ष प्रशासक भी था उसने हिन्दुओं एवं मुस्लिमों में कोई भेदभाव नहीं किया। हिन्दुओं को भी योग्यता के आधार पर उच्च पदों पर नियुक्त किया।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

वह भ्रष्टाचार पर भी नजर रखता था। किसी भी अधिकारी कर्मचारी को भ्रष्टाचार के मामले में कठोर दण्ड देता था।

इस तरह वह कुशल कूटनीतिज्ञ था। अपनी कूटनीतिक क्षमता के आधार पर द्वितीय आंग्ल-मैसूर युद्ध में अंग्रेजों के विरुद्ध त्रिगुट बनाने में सफल रहा और अपने राज्य को बचाए रखा।

वह यूरोपीय शक्तियों से उतना ही सम्बन्ध रखता था जितना की ~~र~~ राज्य की आवश्यकता के लिए आवश्यक थे। इस तरह हैदर अली एक राज्य निर्माता था।

वहीं ~~@~~ टीपू ~~सुल्~~ सुल्तान एक जिद्दी एवं घमंडी शासक था। उसने विदेश नीति के सन्दर्भ में अपने पिता के सिद्धांतों को त्याग दिया।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

फलत: तृतीय आंग्ल-मैसूर के युद्ध में उसके विरुद्ध निजाम, मराठे एवं अंग्रेजों का त्रिगुट बन गया और इसने साम्राज्य के पतन का मार्ग प्रशस्त हो गया।

इसी तरह उसने प्राचीन धार्मिकों पर आलौकिक विश्वास किया। वह मान्यता-धारणा के लिए केवल ज्योतिषियों पर निर्भर रहा किंतु उसे समर पर सैन्य सफलता प्राप्त नहीं हुई और 1791 में मैसूर को पराजित कर अंग्रेजों ने श्रीरंगपट्टनम संधि कर ली।

इस तरह हैदर का साम्राज्य निर्माता था जबकि टीपू साम्राज्य को खोने वाला।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

3. (a) 19वीं सदी के दौरान महिलाओं के प्रति प्रचलित सामाजिक बुराइयों का वर्णन कीजिये और इस संदर्भ में राजाराम मोहन राय एवं ईश्वर चन्द्र विद्यासागर के योगदानों की विवेचना कीजिये। 20

Discuss the contributions of Raja Ram Mohan Roy and Ishwar Chandra Vidyasagar in the context of social evils that prevailed against the women in the 19th century. 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

19वीं शताब्दी में भारतीय समाज में महिलाओं से सम्बन्धित सामाजिक बुराइयों में बाल विवाह, बहु विवाह, सती प्रथा, पर्दा प्रथा, विधवा पुनर्विवाह न होना, महिलाओं को शिक्षा न देना, बालिका शिशु हत्या ~~जैसी कुरीतियाँ प्रचलित~~ प्रमुख थी।

महिलाओं के सम्बन्धित सामाजिक कुरीतियों को दूर करने में राजाराममोहन राय एवं ईश्वर चन्द्र विद्यासागर की महत्वपूर्ण भूमिका रही, जो निम्न है।

राजा राम मोहन राय:

भारतीय समाज में सती प्रथा प्राचीन काल से चली आ रही थी। यह अमानवीय थी और सभ्य समाज पर प्रश्न चिह्न लगाती थी। अतः राजाराम मोहन

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

के प्रयासों ने लॉर्ड विलियम बैंटिक ने 1829 के बंगाल रेगुलेशन एक्ट के तहत सती प्रथा को प्रतिबंधित करते हुए दण्डनीय अपराध घोषित कर दिया।

इसके अलावा राजाराम मोहन राय ने महिलाओं से सम्बन्धित अन्य कुरीतियों बाल विवाह, शिशु हत्या का विरोध किया। वे महिलाओं को आधुनिक शिक्षा देने के समर्थक थे ताकि महिलाएँ सशक्त हो सकें।

ईश्वर चन्द्र विद्यासागर

ईश्वर चन्द्र विद्यासागर ने विधवा पुनर्विवाह को कानूनी मान्यता दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

वस्तुतः 1829 में सती प्रथा प्रतिबंधित होने से समाज में विधवाओं की संख्या बढ़ने लगी। चूँकि उन्हें

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

समाज में सम्मानजनक स्थिति प्राप्त नहीं थी। अतः विधवाओं की दशा दयनीय होने लगी।

साथ ही विधवाओं को उत्तराधिकार के मामले में स्पष्ट अधिकार नहीं थे। ऐसी परिस्थिति में विधवा पुनर्विवाह को कानूनी मान्यता दिलाना अनिवार्य हो गया।

अन्ततः विद्यासागर के प्रयासों से 1856 ई. में विधवा पुनर्विवाह अधिनियम बना। इस तरह यह अधिनियम सती प्रथा अधिनियम की तार्किक परिणति था। अतः हम कह सकते हैं कि राजा राम मोहन राय के प्रयासों को ईश्वर चन्द्र विद्यासागर के प्रयासों ने पूर्णता प्रदान की।

इसके अलावा, विद्यासागर ने बालिका शिक्षा को प्रोत्साहन दिया और इसके लिए अनेक बालिका विद्यालयों की स्थापना की।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(b) ब्रिटिश औपनिवेशिक काल के दौरान बारंबार पड़ने वाले अकालों एवं दरिद्रता के लिये उत्तरदायी कारणों के संदर्भ में ब्रिटिश नीतियों का परीक्षण कीजिये। 15

Examine the British policies as the factors responsible for the frequent famines and poverty during British colonial period. 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

औपनिवेशिक शासन के दौरान बारम्बार पड़ने वाले अकालों एवं गरीबी के लिए ब्रिटिश औपनिवेशिक आर्थिक, प्रशासनिक नीतियाँ उत्तरदायी थी।

आर्थिक नीतियाँ

→ अधिकतम लगान वसूलने के कारण किसान निर्धन हुए और उनकी क्रयशक्ति कम हो गई।

→ कृषि के वाणिज्यीकरण के तहत जूट, तम्बाकू, नील, अफीम जैसी नगदी फसलों की खेती पर बल देने से खाद्यान्न उत्पादन में कमी हुई। फलतः अकाल एवं भुखमरी की स्थिति उत्पन्न हुई।

→ मुक्त व्यापार नीति के कारण भारतीय हस्तशिल्पों का पतन हुआ और शिल्पकार बेरोजगार होकर कृषि

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

उद्योग नष्ट हो गये। अतः कृषि पर बोझ बढ़ने से कृषि और पिछड़ गई।

→ रेलवे के विकास के कारण भारत से आयात या निर्यात इंग्लैण्ड किया जाने लगा। (1856 तक ब्रिटिश आवश्यकता का 33%.)

प्रशासनिक नीतियाँ

→ बंगाल में द्वैध शासन के दौरान किसानों से अत्यधिक राजस्व वसूला गया। फलतः किसानों ने कृषि कार्यों को छोड़ने से उत्पादन में कमी हुई और अकाल की स्थिति उत्पन्न हुई।

→ भारतीय कृषि मानसून पर आधारित थी। प्राचीन काल एवं मध्यकाल में सिंचाई के साधनों के विकास पर बल दिया गया था किंतु ब्रिटिश सरकार ने सिंचाई के साधनों पर ध्यान नहीं दिया। फलतः अतिवृष्टि/अनावृष्टि के [illegible]

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

→ अकाल की स्थितियों के निपटने हेतु आपदारण का समुचित प्रबंधन नहीं किया गया।

दरिद्रता के अन्य कारण

→ सामाजिक - धार्मिक कार्यों पर किया जाने पर आत्यधिक व्यय।

→ प्राकृतिक आपदाओं से फसलों का नाश होना।

→ मुकदमेबाजी का विकास।

→ उत्पादन कारकों जैसे - भूमि, पशु, बीज, इत्यादि के लिए ऋण लेना।

निष्कर्ष रूप से कहा जा सकता है कि औपनिवेशिक शासन के दौरान अकाल एवं गरीबी का कारण ब्रिटिश नीतियाँ ही मुख्य रूप से उत्तरदायी थी जिसने निर्धनता, ऋणग्रस्तता, अकालों की बारम्बारता, बेरोजगारी, कृषि का पिछड़ापन को भारतीय अर्थव्यवस्था का स्थायी तत्व बना दिया।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(c) ब्रिटिश भारत में परिवहन तथा संचार व्यवस्था की ब्रिटेन की आर्थिक नीतियों से जुड़ाव की चर्चा कीजिये। 15

Discuss the linkage between British India transport and communication system and the economic policies of Britain. 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

ब्रिटिश शासन ने भारत के अपने औपनिवेशिक हितों की पूर्ति के लिए परिवहन (सड़क, रेल, नहर) एवं संचार (डाक प्रणाली, तार) व्यवस्था का निर्माण किया। यह परिवहन एवं संचार व्यवस्था तथा ब्रिटिश आर्थिक नीतियों में के घनिष्ठ जुड़ाव था जो निम्न प्रकार है–

रेलवे के निर्माण का मुख्य उद्देश्य भारतीय बाजार पर नियन्त्रण करना था। रेलवे के माध्यम से कच्चे माल उत्पादन केन्द्रों को बंदरगाह बंदरगाहों से जोड़ा गया ताकि ब्रिटिश उद्योगों को कच्चे माल की आपूर्ति की जा सके।

साथ ही रेलवे के माध्यम से ब्रिटिश वस्तुओं को भारत के

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

आंतरिक भागों तक पहुँचाया जा सकता था। अत: इसने ब्रिटिश उत्पादों के लिए एक विशाल बाजार का निर्माण कर दिया।

इसी तरह रेलवे से सम्बन्धित भारी एवं आधारभूत उद्योगों का विकास भी इंग्लैण्ड में हुआ।

रेलवे के कारण भारतीय धन की निकासी होने से ब्रिटिश औद्योगीकरण के लिए पूँजी प्राप्त हुई।

चूँकि, ब्रिटिश उद्योगपतियों एवं पूँजीपतियों के पास व्यापारिक पूँजीवाद एवं औद्योगिक पूँजीवाद के कारण अत्यधिक पूँजी एकत्रित हो गई। अत: इस पूँजी का निवेश भारत में परिवहन एवं संचार ~~के साधनों के~~ के साधनों जैसे - रेलवे, जहाजरानी उद्योग, डाक एवं तार प्रणाली के विकास में

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

नियंत्रित किया गया।

किन्तु इसका सम्बन्ध केवल आर्थिक नीतियों से नहीं था बल्कि परिवहन एवं संचार के साधनों से ब्रिटिश ने भारत पर अपनी प्रशासनिक पकड़ मजबूत की। रेलवे के माध्यम से सेना का तीव्र आवागमन सुनिश्चित होने से विद्रोह को तुरन्त दबाया जा सका और डाक एवं तार प्रणाली के माध्यम से तुरन्त संदेश भेजकर सभी पर नियंत्रण करने का प्रयास किया गया।

निष्कर्ष के तौर पर कहा जा सकता है कि परिवहन एवं संचार के साधनों का आर्थिक नीतियों के साथ-साथ प्रशासनिक, सैनिक एवं राजनैतिक नीतियों से भी घनिष्ठ जुड़ाव था।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

4. (a) ब्रिटिश शासन के खिलाफ सिपाही विद्रोह के पीछे निहित प्रमुख कारणों का परीक्षण कीजिये और बताइये कि इसके लिये उत्तरदायी परिस्थितियाँ पैदा करने में डलहौजी की नीतियाँ किस हद तक ज़िम्मेदार थीं? 20

Examine the root causes of the Sepoy Rebellion against the British rule. To what extent the policies of Dalhausie can be held responsible for creating the circumstances? 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

खण्ड - ख / SECTION - B

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

5. निम्नलिखित में से प्रत्येक का उत्तर लगभग 150 शब्दों में दीजिये: 10 × 5 = 50

Answer the following in about 150 words each:

(a) बक्सर युद्ध के पीछे निहित कारणों एवं परिणामों की विवेचना कीजिये।

Examine the causes and consequences behind the battle of Buxar.

कारण:

→ मीर कासिम एक महत्वाकांक्षी नवाब था। वह शासन की वास्तविक शक्तियों का उपयोग करना चाहता था। इसलिए उसने यूरोपीय आधार पर सेना को प्रशिक्षित किया।

→ अंग्रेजों से दूर रहने हेतु राजधानी मुर्शिदाबाद से मुंगेर स्थानान्तरित की।

→ दस्तक के दुरुपयोग को रोकने के लिए ~~सभी~~ व्यापार से सभी आंतरिक करों को समाप्त कर दी। फलतः अंग्रेज असंतुष्ट हुए और ~~अवध के~~ नवाब ने अवध के शरण ली।

बक्सर का युद्ध मीर कासिम, शुजाउद्दौला, शाहआलम II एवं अंग्रेजों के मध्य हुआ जिसके परिणाम निम्न

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

रहे –

1) इस युद्ध में अंग्रेज विजय हुआ और बंगाल के वास्तविक शासक बन गए। इस दृष्टि से इसने बंगाल के वास्तविक शासक की पहचान कर दी।

2) यह प्लासी की तरह षड्यन्त्र नहीं था बल्कि वास्तविक युद्ध था जिसने अंग्रेजों अपनी शक्ति प्रमाणित कर दी।

3) अंग्रेजों को इलाहाबाद की संधि से बंगाल, बिहार एवं ओडिसा की दीवानी प्राप्त ~~हुआ~~ हुई और वे भारत के वैध शासक बन गए।

निष्कर्ष रूप से कहा जा सकता है कि बक्सर के युद्ध ने प्लासी के निर्णय ~~को~~ पर मुहर लगा दी और ~~भारतीय को~~ भारतीयों के लिए औपनिवेशिक शोषण एवं दासता का युग प्रारंभ हुआ।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
दृष्टि The Vision
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(b) भारतीय शक्तियों के अंग्रेज़ों के विरुद्ध असफल होने के कारणों की समीक्षा कीजिये।

Examine the causes for the failure of Indian rulers against the British.

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

भारत में अंग्रेजों को अपना साम्राज्य स्थापित करने के लिए देशीय शासकों जैसे- बंगाल, मैसूर, मराठा, इत्यादि से संघर्ष करना पड़ा। इसमें देशीय शासकों पराजित हुई जिसके निम्न कारण थे -

1.) भारत की सभी देशीय शासकों परस्पर संघर्षरत थी। फलतः वे अंग्रेजों को एकजुट होकर टक्कर नहीं दे सकी।

2) देशीय शासकों का आर्थिक आधार सुदृढ़ नहीं था। फलतः वे सैन्य क्षमता का विकास अंग्रेजों के समकक्ष नहीं कर पायी।

3) अंग्रेजों के पास आधुनिक प्रशिक्षित सेना थी जिसके पास आधुनिक अस्त्र-शस्त्र बंदूक, तोप, गोले थे जबकि देशीय शासकों के

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

पास इसका अभाव था।

4) अंग्रेजों के पास शक्तिशाली नौसेना थी। वहीं डेनिश आमेलों इसका विकास नहीं कर पायी।

5) इस ~~समय~~ समय यूरोप में पुनर्जागरण एवं प्रबोधन भी हुआ था। इसका सर्वाधिक लाभ ब्रिटेन को मिला। इस शक्ति ने यह स्टेवीन शक्ति की विजय थी।

6) औद्योगिक क्रांति के कारण ब्रिटिश वस्तुओं के लिए बाजार एवं कि ओं के लिए कच्चे माल की आवश्यकता थी।

अतः यह ब्रिटिश साम्राज्यवाद की विजय थी।

निष्कर्ष रूप कहा जा सकता है कि अंग्रेजों की भारत विजय सामन्ती देश पर आधुनिक देश की विजय थी।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

(c) ब्रिटिश शासन के दौरान भारतीय कृषि एवं उद्योगों का विकास अवरुद्ध होने के कारणों की विवेचना कीजिये।

Discuss the factors that impeded the development of Indian agriculture and industries during the British rule.

ब्रिटिश शासन द्वारा भारत में औपनिवेशिक आर्थिक नीतियाँ अपनायी जिससे भारतीय अर्थव्यवस्था का रूपान्तरण औपनिवेशिक अर्थव्यवस्था में हो गया और कृषि एवं उद्योगों का विकास अवरुद्ध हुआ। जिसके निम्न कारण थे-

→ ब्रिटिश भूराजस्व नीतियों ने अधिकतम भूराजस्व प्राप्ति का लक्ष्य रखा। फलत: किसानों के पास कृषि विकास के लिए पूंजी का अभाव हुआ।

वहीं जमींदारों ने भी सूर्यास्त अधिनियम के तहत जमींदारी नीलामी के भय के कारण कृषि विकास में रुचि नहीं दिखाई।

→ ब्रिटिश मुक्त व्यापार नीति के कारण हस्तशिल्पों का पतन हुआ और

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

शिल्पकार कृषि क्षेत्र में पलायन कर गये।
फलत: कृषि का पिछड़ापन सामने आया।

→ अकाल-सूखा पर पड़ने वाले अकालों के कारण कृषि का विकास प्रभावित हुआ और इसके भारतीय हस्तशिल्पों के विकास पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ा।

→ रेलवे के विकास से धन की निकासी के कारण पूँजी का अभाव होने से आर्थिक-औद्योगिक विकास बाधित हुआ।

→ भारतीय वस्तुओं पर ब्रिटेन में तत्कालीन उच्च आयात शुल्क लगाया गया।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कृषि एवं औद्योगिक अवरुद्ध होने से भारत में निर्धनता, खाद्य संकट, अकाल, बेरोजगारी, विऔद्योगीकरण भारतीय अर्थव्यवस्था का मुख्य अभिलक्षण बन गया।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(d) एक व्यापक जनसंघर्ष के रूप में नागरिक अवज्ञा आंदोलन के महत्त्व का वर्णन कीजिये।

Explain the significance of Civil Disobedience Movement as a mass struggle.

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

~~गाँधी द्वारा 1920 में 1 वर्ष में स्वराज प्राप्ति की घोषणा के बाद~~

गाँधीजी द्वारा 12 मार्च, 1930 को दाण्डी मार्च के साथ ही नागरिक अवज्ञा आन्दोलन प्रारम्भ किया गया जिसमें किसानों, महिलाओं, युवा, विद्यार्थियों एवं व्यावसायिक वर्ग की महत्वपूर्ण भूमिका रही।

यद्यपि यह आंदोलन गाँधी-इर्विन समझौते के पश्चात् स्थगित कर दिया गया। फिर भी इसका भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन में महत्व निम्न है-

→ पहली बार ब्रिटिश सरकार द्वारा भारतीयों के साथ बराबरी का समझौता किया गया था। फलतः गाँधी भारतीय जनता के स्वाभाविक प्रतिनिधि बन गए।

अतः जब राजनीतिक मैत्री

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

जेल से बाहर आने पर जनता ने उनका नायक की तरह स्वागत किया। इससे देश के लोगों में आत्मविश्वास एवं उत्साह का संचार हुआ।

→ कांग्रेस ने गांधी को द्वितीय गोलमेज सम्मेलन में भागीदारी के लिए चुना जिससे भारत में संवैधानिक सुधारों का मार्ग प्रशस्त हुआ।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(e) दक्षिण भारत में जातिगत आंदोलनों के विषय में चर्चा कीजिये और इनके परिणामों को भी बताइये।

Discuss the caste movements of South India and explain their consequences.

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

औपनिवेशिक भारत के दौरान दक्षिण भारत में अनेक जातिगत आंदोलन हुए जो निम्न प्रकार है -

ज्योतिबा फुले ने दलितों के उत्थान के लिए सत्यशोधक समाज की स्थापना की। यह एक ब्राह्मण विरोधी आंदोलन था। ज्योतिबा फुले ने अस्पृश्यता एवं ऊँच नीच का विरोध किया। उन्होंने अपने विचारों का प्रचार करने हेतु 'गुलामगिरी' नामक पत्रिका का प्रकाशन किया।

नारायण गुरु ने एझवा जाति के आंदोलन का नेतृत्व किया। उन्होंने एक 'धर्मपरिपालन योगम' संस्था का निर्माण किया और एक जाति, एक धर्म, एक ईश्वर का नारा दिया। उन्होंने भी दलितों के उत्थान पर बल दिया।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

ई.वी. रामास्वामी नायकर 'पेरियार' ने भी आत्मसम्मान आंदोलन चलाया और ~~ब्राह्मणों~~ पुरोहितवाद, ऊँच-नीच, अस्पृश्यता का विरोध किया तथा सामाजिक समानता पर बल दिया।

इसी तरह जस्टिस पार्टी ने भी 'दक्षिण भारतीय उदारवादी संघ' की स्थापना कर ब्राह्मण विरोधी आंदोलन प्रारंभ किया और दलितों के लिए सरकारी नौकरियों में आरक्षण की माँग की।

इन आन्दोलनों का परिणाम यह रहा कि दलितों में जागरूकता का प्रसार हुआ और वे अपने अधिकारों की प्राप्ति हेतु प्रयासरत हुए।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

7. (a) 1909 ई. के भारतीय परिषद अधिनियम की प्रमुख विशेषताओं की चर्चा कीजिये। क्या यह भारतीयों की आकांक्षाओं को संतुष्ट करने में सफल साबित हुआ? 15

Discuss the salient features of the Indian Council Act of 1909. Was it successful in satisfying the aspirations of Indians? 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

ब्रिटिश सरकार द्वारा भारतीय राष्ट्रवाद को कमजोर करने एवं साम्प्रदायिकता को बढ़ावा देने के उद्देश्य से 1909 का भारत परिषद अधिनियम लाया गया। इसे मार्ले-मिंटो सुधारों के नाम से भी जाना जाता है।

विशेषताएँ –

→ केन्द्रीय विधान परिषद के सदस्यों की संख्या में वृद्धि की गई। अब कुल सदस्य संख्या 69 (सरकारी-37, गैर-सरकारी 32) हो गई।

→ प्रांतीय विधान परिषदों में भी सदस्य संख्या में वृद्धि की गई। यहाँ गैर-सरकारी सदस्यों का बहुमत स्थापित हुआ।

→ मुस्लिमों के लिए पृथक निर्वाचन प्रणाली लागू की गई।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

→ अप्रत्यक्ष निर्वाचन प्रणाली लागू की जहाँ स्थानीय निकायों द्वारा निर्वाचित, परिषद् द्वारा प्रांतीय विधानमण्डलों के सदस्यों एवं प्रांतीय सदनों द्वारा केन्द्रीय विधानपरिषद् के सदस्यों का निर्वाचन किया जाता था।

→ गवर्नर जनरल की कार्यकारिणी में भारतीय सदस्य के रूप में सत्येन्द्र प्रसन्नो सिन्हा को एवं भारत सचिव की परिषद् में K.C. गुप्ता एवं सैयद हुसैन बिलग्रामी को सदस्य बनाया गया।

किंतु यह अधिनियम भारतीय आकांक्षाओं को संतुष्ट करने में सफल नहीं रहा, जिसके निम्न कारण है -

→ इस अधिनियम का उद्देश्य न तो उत्तरदायी शासन की स्थापना करना था न ही लोकप्रिय शासन। बल्कि यह विधानपरिषदों को केवल परामर्शदात्री इकाई बनाना चाहता था।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

→ पृथक निर्वाचन प्रणाली के कारण साम्प्रदायिकता को बढ़ावा मिला। यह विभाजन का बीजारोपण था। इसलिए नेहरू ने इसे 'कैंसर' की संज्ञा दी।

→ मताधिकार संपत्ति पर आधारित था।

→ केन्द्रीय विधान परिषदों में सरकारी सदस्यों का बहुमत था। अतः वहाँ गैर-सरकारी सदस्यों को आवाज उठाने का अवसर नहीं मिलता था।

→ प्रांतीय विधानपरिषदों में गैर-सरकारी सदस्यों का बहुमत था लेकिन वे सरकार द्वारा मनोनीत होते थे। अतः सरकार की नीतियों का विरोध नहीं करते थे।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है 1909 के अधिनियम ने प्रकाश तो दिया पर आग नहीं, अतः भारतीय असंतुष्ट रहे।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(b) साम्राज्यवाद विरोधी संघर्ष के दौरान खिलाफत आंदोलन की प्रासंगिकता को स्पष्ट कीजिये और इस संदर्भ में गांधी जी की भूमिका का आलोचनात्मक मूल्यांकन भी कीजिये। 20

Explain the relevance of the Khilafat Movement in the anti-imperialist struggle and critically examine the role of Gandhi in this context. 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

खलीफा मुस्लिम विश्व का धर्म गुरु होने के कारण भारतीय मुस्लिम भी उससे भावनात्मक एवं धार्मिक रूप से जुड़े हुए थे।

प्रथम विश्व युद्ध के पश्चात जब तुर्की के साथ सेवर्स की संधि की गई और तुर्की साम्राज्य का विभाजन किया तो मुस्लिमों ने इसे अपमान माना और खलीफा ~~की केंद्र~~ सम्मान की पुनर्स्थापना हेतु खिलाफत आंदोलन प्रारंभ किया।

प्रासंगिकता:

खिलाफत आंदोलन ने भारतीय मुस्लिमों को ब्रिटिश साम्राज्यवाद के विरुद्ध एकजुट कर दिया। फलत: उपनिवेशवाद ~~संघर्ष~~ विरोधी संघर्ष मजबूत हुआ और मुस्लिमों की राष्ट्रीय आंदोलन में भागीदारी बढ़ी।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

गाँधी की रणनीति:

गाँधी ने खिलाफत आन्दोलन को भारतीय राजनीति से जोड़ा। अतः खिलाफत धार्मिक मामले को राजनीति से जोड़ने के कारण इसे गाँधी की ~~ऐतिहासिक~~ भूल कहा जाता है।

किंतु इस सन्दर्भ में पहले यह जानना आवश्यक है कि गाँधी ने धर्म के मुद्दे को राजनीति से क्यों जोड़ा? इसके निम्न कारण थे-

1.) गाँधी धार्मिक समन्वय में विश्वास रखते थे। अतः वे हिन्दू-मुस्लिम को संगठित प्रतिरोध अंग्रेजों के खिलाफ खड़ा करना चाहते थे।

2) 1916 के कांग्रेस-लीग समझौते के पश्चात गाँधी ने इसे हिन्दू-मुस्लिम एकता को आगे बढ़ाने का एक अवसर माना।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

3) खिलाफत आन्दोलन एवं राष्ट्रीय आन्दोलन में एकमात्र समान था - ब्रिटिश साम्राज्यवाद का विरोध। अतः वे इसके माध्यम से उपनिवेशवाद विरोधी संघर्ष को मजबूत बनाना चाहते थे।

4) गाँधी धर्म एवं नैतिकता को एक दूसरे का पर्याय मानते थे। अतः उन्होंने धर्म एवं राजनीति का पृथक्करण नहीं किया बल्कि खिलाफत आन्दोलन को राष्ट्रीय आन्दोलन से जोड़ दिया।

इस दृष्टि से यह गाँधीजी राजनीतिक भूल नहीं बल्कि एक राजनीतिक जरूरत था।

किंतु एक धार्मिक मुद्दे को राजनीति से जोड़ने पर धार्मिक कट्टरवादी तत्वों को धार्मिक भावनाएँ भड़काने का अवसर मिला जिससे साम्प्रदायिकता को बढ़ावा मिला जो इस आन्दोलन की सीमाओं को दर्शाता है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(c) स्वराज्यवादी एवं अपरिवर्तनवादियों के मध्य मतभेदों की चर्चा करते हुए राष्ट्रवादी आंदोलन में इनकी भूमिका को स्पष्ट कीजिये। 15

Discuss the differences between the Swarajists and the Conservatives and explain their role in the nationalist movement. 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

1922 में चौरी-चौरा काण्ड के पश्चात् असहयोग आन्दोलन वापस लेने के पश्चात् कांग्रेस में वैचारिक मतभेद बढ़े।

कांग्रेस के एक वर्ग का मानना था कि उन्हें चुनावों के माध्यम से विधानमण्डलों में प्रवेश कर सरकार की नीतियों का विरोध करना चाहिए। ~~स्वराजवादी~~ इनमें मोतीलाल नेहरू, C.R. दास, विट्ठल भाई पटेल प्रमुख थे। अतः इन्होंने स्वराज पार्टी की स्थापना की। ये स्वराजवादी या परिवर्तनवादी कहलाये।

वहीं कांग्रेस का दूसरा वर्ग जिसमें राजेन्द्र प्रसाद, वल्लभ भाई पटेल, राजगोपालाचारी इत्यादि गांधीवादी रणनीतियों में कोई परिवर्तन नहीं चाहते थे।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

वे रचनात्मक कार्यक्रमों के माध्यम से जनता को जागरूक एवं आंदोलित बनाना चाहते थे।

स्वराजवादियों की भूमिका:

स्वराज पार्टी की स्थापना के पश्चात चुनावों में भाग लिया और महत्वपूर्ण के स्थान ग्रहण किया।

इन्होंने विधानमंडलों में सरकार की नीतियों की आलोचना की। स्थगन प्रस्ताव लाये। नागरिक स्वतंत्रता पर भाषण दिये। केन्द्रीय विधानमंडल में विट्ठल भाई पटेल को अध्यक्ष पद पर में सफल रहे।

इनके प्रयासों के कारण सरकार को सार्वजनिक सुरक्षा विधेयक वापस लेना पड़ा।

इस इन्होंने राष्ट्रीय आन्दोलन के निष्क्रिय दौर में भी राजनीतिक गतिविधियों के माध्यम से जनता को आंदोलित बनाये रखा।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अपरिवर्तनवादियों की भूमिका

अपरिवर्तनवादियों ने गाँधी के रचनात्मक कार्यों (जैसे - ग्राम स्वच्छता, चरखा, खादी, स्वदेशी अपना, अस्पृश्यता निवारण, पंचायतों के माध्यम से विवाद) के माध्यम से जनता को जागरूक किया और आगे के आन्दोलन के लिए आधार बनाया।

निष्कर्ष रूप से कहा जा सकता है कि असहयोग आन्दोलन के पश्चात भले ही कांग्रेस में मतभेद हो गये हों लेकिन इसके बावजूद भी स्वराजवादियों एवं अपरिवर्तनवादियों ने राष्ट्रीय आन्दोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation